स्वामी विवेकानन्द

शब्दार्थ :–

प्रतिनिधि – किसी के स्थान पर कार्य करने वाला व्यक्ति , प्रतिरूप

विराजमान – प्रकाशमान , उपस्थित

सम्बोधन – बतलाना , समझाना , ज्ञान कराना

एकमत – किसी विषय पर एक राय रखने वाला

श्रोतागण – सुनने वाले लोगों का समूह

आकृष्ट – आकर्षित , खींचा हुआ

मोह - प्रेम , प्यार

क) सर्व–धर्म सम्मेलन 11 सितम्बर , 1893 , सोमवार के दिन अमेरिका के विशाल सभा – भवन कोलंबर में हुआ था |

ख) स्वामी विवेकानन्द के तेजस्वी मुखमंडल और भगवा वेश – भूषा के कारण सबकी दृष्टि उनकी ओर आकृष्ट हो रही थी |

ग) स्वामी जी को शाम के वक्त बोलने का अवसर प्राप्त हुआ | ज्यों ही स्वामी जी भाषण के लिए खड़े हुए , उनका मुखमंडल तेज़ से दीप्त हो उठा | स्वामी जी ने कहा –" अमेरिका में रहने वाले मेरे भाइयों और बहनों ! " यह सम्बोधन सुनते ही तालियों की गड़गड़ाहट से सारा भवन गूँज उठा |

घ) ' बहन और भाई ' में विश्व – बंधुत्व की भावना छिपी हुई थी |

ड) गीता के एक श्लोक के आधार पर उन्होंने बताया – " कोई भी भक्त मुझे जिस रूप में ग्रहण करता है , में उसे उसी रूप में मिल जाता हूँ |

च) भारतीय संस्कृति में विशालता और उदारता का वर्णन है | विवेकानन्द के शब्द श्रोताओं के हृदय – पटल पर सदा लिए अंकित हो गए थे | स्वामी जी ने भारतीय संस्कृति के उन पक्षों को सबके सामने प्रस्तुत किया जो सभी धर्मों द्वारा एकमत से मान्य हैं | जैसे – धृती , क्षमा , मन को वश में करना , इन्द्रियों पर नियंत्रण , संयम , कर्म की पवित्रता ,बुद्धि के अनुकूल कार्य करना , ज्ञान की प्राप्ति , क्रोध को वश में करना इत्यादि |

छ) स्वामी जी ने कहा –" यदि विश्व मात्र का कोई एक सामान्य धर्म हो सकता है तो वही एक धर्म है , जो देश या काल की परिस्थितियों से ऊपर हो और जो मानवमात्र का कल्याण कर सके | उस धर्म के नियम पालन करने के लिए किसी को नए धर्म में प्रवेश की आवश्यकता नहीं है | मानव धर्म को अपनाते हुए हमें चाहिए कि हम एक दूसरे की सहायता करें , न कि लड़ाई | परस्पर प्रेम बढ़ाएँ , न कि द्वेष | शांति बनाए रखें , न कि अशांति |"

ज) स्वामी जी शब्दों का जनसमूह पर ऐसा पड़ा कि वे विशेष व्यक्ति माने जाने लगे | अमेरिका के प्रेस ने स्वामी जी का नाम दिशा – दिशा में गुँजा दिया |

झ) ' दी न्यू मार्क हेराल्ड ' नामक पत्र ने तो यहाँ तक लिखा – ' जिस देश (भारत) से स्वामी जी आए हैं , उनकी बातें सुनकर ऐसा लगता है कि उस देश में धर्म प्रचार के लिए ईसाई मिशनरियों को भेजना मूर्खता ही है |

10) स्वामी जी का भारतवासियों के लिए सन्देश था कि ! हे भारत के नर–नारियों ! सभी वर्गों और जाति के लोगों ! इस बात को ध्यान से सुनो कि तुममें वह अदम्य शक्ति छिपी हुई है , जिसे तुम समझ नहीं रहे हो | वह आत्मा में परब्रह्मा की अदम्य शक्ति से प्रज्वलित होती है | मैं प्रत्येक आत्मा को प्रेरणा देता हूँ कि वह अपने को समझे , जागे और आगे बढ़े | तब तक बढ़ते ही जाओ , जब तक तुम लक्ष्य तक नहीं पहुँचते | दुर्बलता के मोह से जागो | तुम प्रबल हो , दुर्बलता त्यागो | अपने में परमात्मा अनुभूति करो | उसकी अनुभूति से तुम महान और बलवान बन सकते हो | "